बच्चे सतसंग में बैठे हैं। इस सत के सर्ग में कल्प में संगम युग में ही बच्चे बैठते है। दुनिया तो यह नही जानतें कि सत का संग किसको कहा जाता है। सतसंग नाम यह अविनाशी चला आता है। भक्ति मार्ग में भी कहते है हम फलानें सत्संग में गये। अब वास्तव में भक्ति मार्ग मे कोई सत्संग मे जाते नही है। सत्संग होता ही ज्ञान मार्ग में। अब तुम सत के संग मे बैठे हो। आत्मायें सत बाप के संग में बैठी हैं। और कोई जगह आत्मायें परमात्मा साथ नही बैठती। बाप को जानते ही नही। भल कहते है हम सत्संग में जाते हैं परन्तु वो देहअभिमान में आ जाते है। तुम देह अभिमान में नही आवेंगें। तुम समझते हो हम आत्मा है। सत बाबा के संगअब बैठे है। और कोई भी मनुष्य सत के संग में बैठ नही सकते। सत का संग यह नाम भी अभी ही है। सत्संग का यथार्थ रीती अर्थ बाप बैठ समझाते है। तुम आत्मायें जो परमात्मा सत है उनके साथ बैठी हो। वो सत बाप सत टीचर सतगुरू है। तो गोया तुम सतसंग मे बैठे हो फिर भलें यहां वा घर बैठे हो परन्तु अपने को आत्मा समझ याद बाप को करते हो। हम आत्मा अब सत बाप को याद कर रही हैं। अर्थात सत के संग में है। सत बाप मधुबन में बैठे हैं। बाप की याद करनें की युक्तियां भी अनेक प्रकार की मिलती हैं। याद सें ही विकर्म विनाश होंगें। यह भी बच्चे जानते हैं हम सम्पूर्ण 16कला बनते हैं फिर उतरते-2 ना कला में आ जाते है। भक्ति भी पहलें अव्यभचारी है गोया 16 कला सम्पूर्ण है। फिर गिरते-2पिछाड़ी भक्ति होंनें सें तमोप्रधान बन जाते हैं। फिर उनको सत का संग जरूर चाहिये। नही तो पवित्र कैसे बनें। तो अब तुम आत्माओं को सत बाप का संग मिला है। आत्मा जानती हमको बाप को याद करना है। उनका ही संग है। याद को भी संग कहेंगें। यह है सत का संग। इस देह के होते हुये भी तुम आत्मा मुझे याद करो। यह है सत का संग। जैसे कहते है ना इनको बुरे आदमी का संग लगा है इसी लिये देहअभिमानी बन गया है। अभी तुम्हारा संग हुआ है सत के साथ। जैसे तुम सतोप्रधान बन जाते हो। बाप कहते है मैं एक ही बार आता हूं। अभी आत्मा का परमात्मा सें संग होंनें सें तुम 21जन्मों लिये पार हो जाते हो। फिर तुमको संग लगता है देही का। यह भी ड्रामा बना हुआ है। बाप कहते हैं मेरे साथ तुम बच्चों का संग होंनें सें तुम सतोप्रधान बन जाते हो। जिसको गोल्डन एज कहा जाता है। गोल्ड का अक्षर क्यूं निकाला? क्यूं कि आत्मा में ही खाद पड़ती है। यह भी तुम बच्चे जानते हो। साधु सन्त आद तो समझते है आत्मा निर्लेप है। सभी परमात्मा परमात्मा ही परमात्मा है। तो इसका मतलब परमात्मा में खाद पड़ी हुई है। परमात्मा में खाद तो पड़ नही सकती। बाप कहते है क्या मुझ परम-आत्मा में खाद पड़ती है? मैं तो सदैव परमधाम में रहता हूं। क्यों कि मुझे तो जन्म मरण मे आना नही है। यह तुम जानते हो। तुम्हारे में सें भी कोई का संग जास्ती है कोई का कम है। कोई तो अच्छे रीती पुरूषार्थ कर योग में रहते है। जितना समय आत्मा बाप का संग करेगी उतना फायदा है। विकर्म विनाश होंगें। बाप कहते है हे आत्माओं मुझ बाप को याद करो। मेरा संग करो। मुझे भी शरीर का आधार लेना पड़ता है। नही तो परमात्मा बोलें कैसे? अभी तुम बच्चों का संग है सत के साथ। सत बाप को निरन्तर याद करना है। आत्मा को सत का संगकरना है। आत्मा भी वण्डरफुल है, परमात्मा भी वण्डरफुल है। बहुत वण्डर है। एक भी यह नही जानते कि कैसे इतनी छोटी सी बिंदी में अविनाशी 84जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। यह तुम बच्चे अभी समझते हो आत्मा भी वण्डरफुल है। यह दुनियां कैसे चक्र लगाती है। तुम जानते हो। तुम्हारी आत्मा में कितनी नालेज है। 84जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है। कितना पार्ट बजाती है। वण्डर है सतयुगी आत्मायें और यह आत्मायें। इसमें भी तुम्हारी आत्माओं का वण्डर है। तुम्हारी आत्मा सर्वेसर्वा जास्ती आलराउण्ड पार्ट बजाती है। नाटक में कोई का शुरू सें पार्ट होता है कोई का बीच सें कोई का पिछाड़ी में पार्ट होता है। वो है सब हद के ड्रामा सो भी अभी ही निकले है। जबकि बाप को भी समझाना पड़ता है। 50,60वर्षों के अन्दर कितनी इन्वेन्शन निकली है। अब साइंस का कितना तो जोर

है। सतयुग में कितना इसका बल रहेगा। नई दुनिया कितनी जल्दी बनती होगी। वहाँ पवित्रता का बल है मुख्य। अब है निर्बल। वहाँ है बलवान। यह लन्न. बलवान है नां। रावण ने अभी बल छीन लिया है। फिर इस रावण पर जीत पाकर तुम कितने बलवान बनते हो। जितना संत का संग करेंगे अथवा आत्मा सत का संग करेगी बाप को याद करेगी उतना बलवान बनते हैं। पढ़ाई में भी बल तो मिलता है नां। तुमको भी बल मिलता है। सारे विश्व पर तुम हुक्म चलाते हो। आत्मा का सत के साथ योग संगम पर ही होता है। बाप कहते है आत्मा को मेरा संग मिलने से आत्मा बहुत बलवान हो जाती है। बाप वर्ल्ड आलमाइटी आथारटी है नां। उन द्वारा बल मिलता है। सभी वेदों शास्त्रों सृष्टी की आद मध्य अन्त का ज्ञान आ जाता है। जैसे बाप आलमाइटी है वैसे तुम भी आलमाइटी बनते हो विश्व पर राज्य करते हो।तुमसे कोई छीन नही सक्ते। तुमको मेरे द्वारा कितना बल मिलता है। इनको भी बल मिलता है जितना बाप को याद करेंगे उतना बल मिलेगा। बाप और कोई तकलीफ नही देते।सिर्फ याद करना है। बस 84जन्मों का चक्र अब पूरा हुआ है। अब वापस जाना है। यह समझना कोई बड़ी बात नही है। जास्ती रेजगारी में जाने की तो दरकार नही रहती। बीज को जानने से समझ जाते है इससे यह सारा झाड़ ऐसे निकला है। नटशेल में बुधी में आ जाता है। यह बहुत विचित्र बात है। भक्ति मार्ग में मनुष्य कितने धक्के खाते है। मिलता कुछ भी नही। फिर भी बाप ही आकर तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं। हम योग बल से विश्व का मालिक बनें यह पुरुषार्थ करना है। योग भारत का मशहूर है। योग से तुम्हारी आयु कितनी बड़ी हो जाती है। सत के संग से कितना फायदा होता है। आयु भी बड़ी, और काया भी निरोगी बन जाती है। यह सभी बातें तुम बच्चों की बुधी में ही बिठाई जाती है। और कोई का भी सत का साथ नही है सिवाय तुम ब्राह्मणों के। तुम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान हो। डाडे पोटे हो। तुमको इतनी खुशी होनी चाहिये ना कि हम डाडे पोटे है। वर्सा भी डाडे से मिलता है। यही याद की यात्रा है। बुधी में यही स्मरण रहना चाहिये। यहाँ बिठाया जाता है कि सत के संग में बैठो। इसका मतलब यह भी नही कि एक ही जगह बैठने से ही सत का संग होगा नही। उठते बैठते चलते फिरते हम सत के संग में हैं अगर उनको याद करते है तो। याद नही करते है तो देह अभिमान में है। देह तो असत चीज है नां। देह को सत नही कहेंगे। शरीर तो जड़ है पांच तत्वों का बना हुआ है। इनमें आत्मा नहीं होती तो चुर पुर ना सके। मनुष्य के शरीर की तो वैल्यु है नही। और सबके शरीर की वैल्यु है।सौभाग्य तो आत्मा को मिलता है नां। मैं मछी खावे वाला हूं। मैं फलाना हूं, आत्मा ही कहती है नां। बाप कहते है आत्मा कैसी हो गई है। अन्दर कच्छ मच्छ आद सब खा जाती है। आजकल तो सभी कहते है गवर्मेन्ट भस्मासुर है। अपने को भस्म कर रही है। वो कोई अर्थ थोड़ेई समझते है।हर एक भस्मासुर है। अपने को आप ही भस्म करते है। कैसे?काम चिक्षा पर बैठ कर हर एक अपने को भस्म कर रहे हैं। तो भस्मासुर ठहरे नां। अभी तुम ज्ञान चिक्षा पर बैठे हो तो देवता बनते हो। सारी दुनियां काम चिक्षा पर बैठ कर भस्म हो गई है। तमोप्रधान काली हो गई है। बाप आते है बच्चों को काले से गोरा बनाने। इसको कहा ही जाता है भस्मासुरों का राज्य।काम चिक्षा पर बैठअपने को भस्म कर दिया है। यह अर्थ कोई नही समझते है। सन्यासियोंको भी तुम कह सक्ते हो भस्मासुर। इनकी करतूतें तो हबशियों से भी बुरी है। बाप के लिये कह देते है कण-2 पत्थर ठिक्कर में है। है ही भस्मासुरों की दुनियां। काम चिक्षा पर बैठ कर जल मरे है। पैदा तो विकार से होते है नां।सतयुग में रावण ही नही होता। अभी तो कितने पतित बन गये है।आगे यह अक्षर भी नही निकलते थे।अभी तो मौत सामने खड़ी है। तमोप्रधान बन गये है तो ही ऐसे-2 अक्षर भी निकलते है। परन्तु समझते नही है। है ही भस्मासुरों की दुनियां तो उसमें तो सब आ गये। तो बाप बच्चों को समझाते है देह अभिमान छोड़ कर अपने को आत्मा समझो। बच्चे स्कूल में पढ़ते है फिर पढ़ाई तो घर में रहते भी बुधी में रहती है नां।सच भी तुम्हारी बुधी मे रहना चाहिये। यह है --

तुम्हारी स्टूडन्ट लाईफ। ऐम आबजेक्ट सामने खड़ा है। उठते बैठते चलते फिरते खुशी में यही नालेज रखनी है। यहां बच्चे आते हैं रिफ्रेश होते है। युक्तियां समझाई जाती है कि ऐसे-2 समझाओ। ढेर के ढेर सत्संग होते है कुल दुनियां में। कितने मनुष्य आकर इकठे होते है। उनको सत का संग तो है नही। सत का संग अभी तुम बच्चों को मिलता है। बाबा सतयुग स्थापन करते है। तुम मालिक बन जाते हो। देह अभिमान अथवा झूठे अभिमान से तुम गिर जाते हो। और सत के संग से तुम चढ़ जाते हो। आधा कल्प तुम प्रारब्ध भोगते हैं ऐसे नही कि वहां भी तुमको सत का संग है। नही। सत का संग और झूठ का संग तब कहते है जब दोनों ही हाजिर हो। सत बाप आते है वो ही आकर सभी बातें समझाते है। जब तक सत नही तब तक कोई जानता भी नही है। अभी बाप तुम आत्माओं को कहते है हे आत्माओं मेरे साथ संग रखो। देह का जो संग मिला है उससे उपराम हो जाओ। देह का संग तो भले सतयुग में भी होगा परन्तु वहां तो तुम हो ही पावन। अभी तुम सत के संग से पतित से पावन बनते हो। फिर शरीर भी सतोप्रधान बनेगा। आत्मा भी सतोप्रधान रहेगी। दुनियां नई और पुरानी होती है। नई दुनियां में बरोबर आदी सनातन देवी देवता धर्म था। आज इस धर्म को गुम कर अभी हिन्दु धर्म कह देते है। जो मुंह पड़े है। अभी तुम भारतवासी समझते हो हम प्राचीन देवी देवता धर्म के थे। परन्तु वो नशा ही कहां। कल्प की आयु ही लम्बी लिख दी है। सभी बातें को भूल गये है। इनका नाम ही है भूल भुलैया का खेल। अभी सत दवारा सारी नालेज जानने से तुम ऊंच पद फिर पाते हो। फिर आधा कल्प बाद नीचे गिर पड़ते हो। क्यूं कि रावण राज्य शुरू होता है। दुनियां पुरानी तो होगी नां। तुम समझते हो हम नई दुनियां के मालिक थे। अब पुरानी दुनियां में है। कोई-2 को यह भी याद नही पड़ता है। बाबा हमको स्वर्गवासी बनाते है। आधा कल्प हम स्वर्गवासी रहेंगे फिर नर्कवासी बनेंगे। तुम भी मास्टर आलमाईटी आथारटी बने हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह है ज्ञानामृत का डोज। शिव बाबा को आर्गन्स मिले है पुराने। नया आर्गन्स तो मिलता नही। पुराना सड़ा हुआ बाजा मिलता है। घड़ी-2 खराब होता है। बाप को आना भी वानप्रस्थ में ही है। बच्चे भी खुश होते है बाप भी खुश होते है। बाप कहते है हम जाते है बच्चों को नालेज देकर रावण से छुड़ाने। पटिखुशी से बजाया जाता है नां। सबसे खुशी से पार्ट बजाते है बाप। कल्प-2 बाप को आना पड़ता है। यह पार्ट कब भी बन्द नही होना है। बच्चों को भी खुशी रहनी चाहिये। जितना सत का संग करेंगे उतनी ही खुशी होगी। याद कम करते है इसलिये उतनी खुशी नही रहती है। बाप बच्चों को मिलकियत देते है नां। सच्चे बच्चे पर बाप का भी प्यार रहता है। सच्चे दिल पर बाप राजी रहते है। अन्दर बाहर जो सच्चे रहते है सर्विस पर तत्पर रहते है वो ही बाप को प्रिय लगते है। जो सच्चे बाप के मददगार रहते है अपने दिल से पूछना है हम सच्ची-2 सर्विस करते है? सच्च बाबा साथ संग रखा है? अगर सच्च बाबा से संग नही रखेंगे तो क्या गति होगी। बहुतों को रस्ता बतावेंगे तो ऊंच पद पावेंगे। नही तो कम पद पावेंगे। सत बाप से हमने क्या वर्सा पाया है? देखना है। कोई कितना पाते है कोई कितना पाते है। रात दिन का फर्क रहता है। ओम शान्ती

डायरैक्शन:— बाप दादा कहते कि सैन्टर पर आने वाले हर एक स्टूडन्ट को हक है बाप दादा को डायरैक्ट
* *******

पत्र लिख सकने का। सैन्टर का अथवा ब्राहम्णी का भी समाचार लिख सकते है। कोई भी ब्राहम्णी किसीको मनाह नही कर सकती कि तुम हमारे पूंछे बिगर पत्र नही भेजो।

2:- स्टूडन्ट को जहां पढ़ाई अच्छी लगती है, जिस सैन्टर पर दिल लगती है वहां ही जाये सकते है। कोई ब्राहम्णी किसी को मनाह नही कर सकती कि तुम फलाने सैन्टर पर मत जाओ। यहां आओ। नही। कोई भी सैन्टर पर जा आ सकते है। जहां अच्छा लगे। सभी शिव बाबा के सैन्टर्स है। शिव बाबा की श्रीमत पर ही चलना है। :- आज्ञाकारी सपूत बच्चों को मीठे मात-पिता का याद प्यार गुड़ मार्निंग